मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

# मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2020-22 /R.N.I. No. 2022007062

बेटे की जगह जन्मी बेटी की जान् खतरे में 2
कांग्रेस को मजबूत करने के लिए हाथ से हाथ जोड़ों अभियान 4
गौतम अडानी समझ बैठे हैं खुद को भारत 5
बजट 2023- कॉर्पोरेट को फायदा और आम जनता के लिए सिर्फ वायदा 6
पंचायती-राज खाते में सरकार ने डाले 1100 करोड़ 8

वर्ष 37 | अंक 13 | फरीदाबाद | 5-11 फरवरी 2023 | फोन-8851091460 | ₹ 5.00

# ईएसआई मेडिकल कॉलेज का एक और करिश्मा

## बिना चीर-फाड़ के बदला गया हृदय का वाल्व

**फरीदाबाद ( म.मो. )** ईएसआई मेडिकल कॉलेज फरीदाबाद के हृदय रोग विशेषज्ञ ने एक उन्नत न्यूनतम इनवेसिव तकनीक टीएवीआर का उपयोग करके 75 वर्षीय पुरुष रोहतान निवासी गांव फलोदा, पर सफलतापूर्वक हृदय वाल्व रिप्लेसमेंट सर्जरी की।

मरीज गंभीर महा महाधमनी स्टेनोसिस से पीड़ित था। इस स्थिति में हृदय का महाधमनी वाल्व संकुचित हो जाता है और इसमें रक्त के प्रवाह में बाधा उत्पन्न होती है। इस स्थिति के कारण मरीज को 4 से 5 महीने से कमजोरी, सांस फूलना, सीने में दर्द की शिकायत हो रही थी।

रोगी को क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव लंग डिजीज भी थी जिसके कारण वह बड़ी सर्जरी के लिए अनुपयुक्त हो गया था। उनके इलाज के लिए दो विकल्प थे, एक ओपन हार्ट सर्जरी थी जिसमें मध्य छाती पर बड़ा कट, खुली पसली और महाधमनी वाल्व को उजागर करना था। इस सर्जरी में ब्लड ट्रांसफ्यूजन, जनरल एनेस्थीसिया, हार्ट लंग बायपास मशीन, वेंटिलेटर की जरूरत होती है। यह प्रक्रिया लेती है

3 से 4 घंटे ऑपरेशन और संक्रमण का उच्च जोखिम। इस प्रक्रिया के साथ अस्पताल में रहने का समय आमतौर पर 7 से 8 दिनों का होता है और पूरी तरह से ठीक होने में 2-3 महीने लगते हैं।

**इलाज की नई तकनीक में-टीएवीआर**

ग्रोइन के माध्यम से छोटा छेद बनाया जाता है और सामान्य एनेस्थीसिया की आवश्यकता के बिना छेद के माध्यम से वाल्व को कैथेटर की मदद से प्रत्यारोपित किया जाता है। इस नई तकनीक में केवल 30-45 मिनट का समय लगता है। रोगी दो दिनों में डिस्चार्ज हो जाता है और एक सप्ताह से भी कम समय में पूरी तरह ठीक हो जाता है। इस तकनीक में वेंटिलेटर, हार्ट लंग बायपास मशीन की जरूरत नहीं पड़ती।

इस नई तकनीक से मरीज का दो दिनों में इलाज किया गया। यह नई प्रक्रिया वर्तमान में भारत के कुछ सरकारी केंद्रों जैसे एम्स, पीजीआई आदि और कुछ निजी अस्पतालों में ही की जाती है।

इस प्रक्रिया को करके ईएसआई मेडिकल कॉलेज फरीदाबाद एम्स जैसे प्रतिष्ठित मेडिकल कॉलेज की लीग में शामिल हो गया है।

ईएसआई मेडिकल कॉलेज फरीदाबाद का कार्डियोलॉजी विभाग ईएसआई लाभार्थियों को देखभाल, तकनीक, क्षमता के उच्च मानकों के साथ इलाज कर रहा है। हृदय रोग विशेषज्ञों की टीम द्वारा टीएवीआर प्रक्रिया की गई जिसमें शामिल हैं।

डॉ मोहन नायर, डॉ. राकेश वर्मा, डॉ विनय कुमार पांडे, डॉ. बिज्जू पिल्लई, डॉ अरविंद डंबलकर, डा. कुणाल शेखर, डॉ हिमांशु अरोड़ा, डॉ. वैशाली।

कॉलेज के डीन डॉ. असीम दास और चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय ने कार्डियोलॉजी टीम को इस तरह के सफल इलाज की उन्नत तकनीक के लिए बधाई दी। उन्होंने अत्याधुनिक मशीन और उपकरण प्रदान करके टीम की मदद की। यह उनका निरंतर प्रोत्साहन है जिसने कार्डियोलॉजी विभाग को रोगियों को उपचार के सर्वोत्तम मानक प्रदान करने में मदद की है।

सुपरस्पेशलिटी चिकित्सा क्षेत्र में इस कॉलेज की यह कोई पहली उपलब्धि नहीं है। इससे पहले एंजियोग्राफ़ी का काम यहां मार्च 2022 से शुरू हो चुका है। करीब 200 एंजियोग्राफी प्रति माह यहां हो रही है। इनमें से करीब 30 प्रतिशत मामलों में स्टंट डाले गये हैं।

यही मामले जब व्यापारिक अस्पतालों को रैफर किये जाते थे तो सभी में स्टंट डाल कर मोटे बिल ईएसआई कॉर्पोरेशन से वसूले जाते थे। दर्जनों कैंसर मरीजों का सफलतापूर्वक बोनमैरो ट्रांस्प्लांटेशन किया जा चुका है। इन मरीजों में न केवल फरीदाबाद बल्कि चेन्नई तक के मरीज यहां आकर लाभान्वित हो चुके हैं। इस तरह के इलाज व्यापारिक अस्पतालों में इतने महंगे होते हैं कि रोहतांन जैसे गरीब मजदूर वहन करने की स्थिति में कभी नहीं हो सकते। एम्स जैसे सरकारी अस्पतालों में तो इनका घुस पाना एकदम असम्भव होता है।

## भाजपा सरकार का झूठ व्यापार

# हरियाणा सरकार के चार 'अदृश्य' मेडिकल कॉलेजों में नर्सिंग कॉलेज खोलने के लिये केन्द्र देगा 12 हजार करोड़

**फ़रीदाबाद ( म.मो. )** झूठी एवं निराधार घोषणा करने में भाजपाइ सरकारों का कोई मुकाबला नहीं। हरियाणा सरकार के चार मेडिकल कॉलेजों में नर्सिंग कॉलेज खोलने के लिये 12 हजार करोड़ रुपये देने का प्रावधान इस बार के केन्द्रीय बजट में किया गया है। गौरतलब है कि राज्य में फिलहाल रोहतक मेडिकल कॉलेज में ही नर्सिंग कॉलेज है। इसके अलावा अनेकों नकली कॉलेज फ़र्जी प्रमाणपत्र देकर नर्स तैयार कर रहे हैं।

सुशिक्षित एवं योग्य नर्स उपलब्ध कराने के लिये केन्द्र सरकार ने राज्य के उन चार मेडिकल कॉलेजों को चिन्हित किया है जिन्हें बनाने का खर्च भी केन्द्र सरकार वहन करने का दावा कर रही है। ये कॉलेज जींद, भिवानी, नारनौल तो हैं ही चौथा इसमें छांयसे वाला अटल बिहारी वाजपेयी भी जोड़ दिया गया है।

जींद, भिवानी एवं नारनौल वाले कॉलेजों में से अभी तक केवल नारनौल वाले की ही आधी-अधूरी बिल्डिंग बन पाई है जबकि भिवानी व जींद वालों के लिये तो अभी तक खट्टर सरकार ने ग्राम पंचायतों से केवल ज़मीन पर ही कब्जा लिया है। ये कब्ज़ा भी कोई आज-कल में नहीं बल्कि बीते चार-पांच साल पहले का लिया हुआ है। कब्जा लेकर वहां के ग्रामीणों को बहकाने के लिये खट्टर तथा केन्द्रीय मंत्रियों ने मिल कर शिलान्यास भी कर दिये हैं। यानी करना-धरना कुछ नहीं केवल शोशेबाजी से ही काम चलाना है।

चौथा कॉलेज छांयसा का अटल बिहारी वाजपेयी है। कहने को तो यहां छात्रों को एमबीबीएस में दाखिला तो दे दिया गया है परन्तु वहां न तो पर्याप्त फैकल्टी है और न ही अस्पताल में कोई मरीज है। समझा जा सकता है कि ऐसे मेडिकल कॉलेज में कोई छात्र क्या तो पढ़ेगा और कोई मरीज क्या इलाज कराने आयेगा। इस तरह के मेडिकल कॉलेज के साथ नर्सिंग कॉलेज भला कैसे चल पायेगा? किसी भी नर्सिंग कॉलेज के साथ अस्पताल का होना ठीक उतना ही जरूरी है जितना कि मेडिकल कॉलेज के साथ।

अब समझने वाली बात यह है कि जब मेडिकल कॉलेज ही नहीं है तो वहां नर्सिंग कॉलेज कैसे बनेंगे? न होगा नौ मन तेल न राधा नाचेगी, लिहाज़ा घोषणावीरों ने मेडिकल कॉलेज बनाने की घोषणा तो पांच साल पहले कर दी थी और अब नर्सिंग कॉलेज बनाने की भी कर दी, बना कुछ भी नहीं और न ही कुछ बनने के आसार हैं। यहां एक मजेदार सवाल यह उठता है कि करनाल, गोहाना व नूंह स्थित मेडिकल कॉलेजों में नर्सिंग कॉलेज क्यों नहीं बनाये जा रहे? उक्त तीनों कॉलेज तो जैसे-तैसे भी हैं चल तो रहे ही हैं। यही तो कमाल की घुंडी है। नर्सिंग कॉलेज बनाने थोड़े ही है केवल घोषणा ही तो करनी है, इसलिये जान बूझ कर उन मेडिकल कॉलेजों में नर्सिंग कॉलेज बनाने की बात की जा रही है जो धरातल पर मौजूद ही नहीं है। वैसे हरियाणा सरकार ने करनाल, गोहाना व नूंह वाले कॉलेजों के साथ नर्सिंग कॉले बनाने के लिये बजट एलोकेट तो वर्षों पूर्व ही कर रखा है, कार्यान्वयन कब होगा कोई नहीं जानता।